ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 427-429

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

हिन्दी सिनेमा के गीतों में साहित्य

डॉ0 प्रमोद कुमार
Email : pvpramod6@gmail.com

Received- 29.11.2020, Revised- 05.12.2020, Accepted - 09.12.2020

सारांश– ***सिनेमा आज भावाभिव्यक्ति का सर्वाधिक प्रभावशाली एवं सशक्त माध्यम है, जो किसी संवेदना, विचार, या घटना को मनोरम व भव्य रूप में प्रस्तुत करता है। व्यक्ति के अंतर्तम के भावों का स्पर्श करते हुए, उसे आत्मीय व सकारात्मक दिशा प्रदान कर, सिनेमा जीवन का समर्थ पैरोकार बनता है। विविध कलाओं का सर्वोत्.ष्ट समुच्चय आज का आधुनिक सिनेमा , अपने हर रूप व प्रस्तुति में सम्प्रेषण का सर्वाधिक प्रभावशाली माध्यम बन चुका है। गीत–संगीत के क्षेत्र में भी उसने अनेक पड़ावों को पार कर विशिष्ट शैलियों व प्रारूपों से जन–मानस को झंकृत कर अदभुत मुकाम पा लिया है। किन्तु साहित्य के संसार से सम्बद्ध लोग , फिल्मी दुनिया की उपेक्षा करते रहे हैं और फिल्मों के लिए लेखन को अपनी अवमानना समझते रहे हैं।***

कुंजीभूत शब्द– भावाभिव्यक्ति, प्रभावशाली, सशक्त माध्यम, संवेदना, भव्य रूप, मुकाम।

असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष– हिंदी विभाग, श्री चित्रगुप्त (पी.जी.) कॉलेज मैनपुरी (उ0प्र0) भारत

अनुरूपी लेखक

साहित्य जगत में 'लोकप्रिय साहित्य बनाम उत्कृष साहित्य ' का विमर्श बहुत पुराना है। चूँकि सिनेमा प्रत्येक कला माध्यम में सर्वाधिक लोकप्रिय रहा है इसलिए साहित्य के लोग इसे व्यावसायिक उपक्रम की श्रेणी में ही रखते आए हैं और अपनी श्रेष्ठता के आडंबर से घिरे रहे हैं। कुछ अपवादों को छोड़ दें तो, साहित्य की दुनिया के लोग हिन्दुस्तानी फिल्मों के दर्शकों को भी नासमझ और साहित्यिक दृष्टि से हेय समझते रहे हैं। किन्तु हमे पता है कि भले ही साहित्य जगत ने सिनेमा को उपेक्षित किया है, पर सिनेमा ने साहित्य से कभी दूरी नहीं बनायी। फिल्मकार को अपनी बात कहने के लिए जब भी किसी साहित्यकार के योगदान की आवश्यकता का अनुभव हुआ, तो उसने उन्हें आगे बढ़ कर आमंत्रित किया और अपनाया। सन् 1931 में सवाक फिल्मों के आगमन के साथ ही भारतीय सिनेमा में गीत–संगीत का प्रचलन आरम्भ हो गया। पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' की स्मृतियों साथ उसके दो गानों–निसार द्वारा गाया गया 'दे दे खुदा के नाम पे' और जुबैदा का गाया 'बदला दिल.३ ' की यादें भी जुड़ी हैं। वस्तुतः सवाक सिनेमा के आरम्भिक दौर में गानों की बहुतायत रहती थी। शुरुआती दौर के हिन्दुस्तानी सिनेमा की भाषा उर्दू थी। इसलिए तत्कालीन फिल्मों में उर्दू के रचनाकार अधिक सक्रिय थे। इसका कारण भारतीय सिनेमा के आरम्भिक दौर पर पारसी रंगमंच का प्रभाव भी रहा, जो उर्दू के रंग में ही रंगा था। इसीलिए हम पाते हैं कि उर्दू अदीबों का अवदान हिंदुस्तानी सिनेमा के सन्दर्भ में हिन्दी के साहित्यकारों की तुलना में अधिक रहा है। मुख्यतः गीत–संगीत के परिप्रेक्ष्य में।

हिन्दी साहित्य जगत ने आरम्भ से ही सिनेमा से दूरी बनाए रखी, किन्तु एक महत्वपूर्ण नाम इस प्रसंग में अमृतलाल नागर का है, जिन्होंने लगभग सात साल, सन् 1940 से 1947 तक, हिन्दी सिनेमा में अपना योगदान दिया और बाद में सिने जगत को छोड़ कर पूरी तरह साहित्यिक जगत के प्रति समर्पित हो गए। मुम्बई (तत्कालीन बंबई), कोल्हापुर और मद्रास में उन्होंने हिन्दी सिनमा के लिए पटकथाएँ और संवाद लिखे। वे भारत में सिनेमा की डबिंग के प्रस्तुतकर्ताओं में से थे। उन्होंने रूसी फिल्में 'नसीरुद्दीन इन बुखारा' तथा 'जोया' और एमव एसव सुब्बुलक्ष्मी की तमिल फिल्म 'मीरा' को हिन्दी में डब किया था। वर्ष 1941 में आई फिल्म 'संगम' में अमृतलाल नागर द्वारा रचित तेरह गीत थे। फिल्म के संगीत निर्देशक थे, दादा चांदेकर। इसी फिल्म में हमे हिन्दी साहित्य के अत्यंत लब्धप्रतिष्ठ हस्ताक्षर श्री जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित एक बड़ा ही सुंदर गीत 'अरे कहीं देखा है तुम्हें 'मिलता है, जिसे मीनाक्षी ने स्वर दिया था। अकादमिक और बौद्धिक ऊचाइयों वाले कुमार साहनी जैसे फिल्मकारों के सिनेमा में गीत–संगीत का कोई स्थान नहीं होता था। वस्तुतः उनके वहाँ होने का कोई कारण भी नहीं होता था। परन्तु कुमार साहनी को अपनी फिल्म'तरंग'(1984) के लिए एक गीत की आवश्यकता का अनुभव हुआ, तो उन्होंने साहित्य जगत के रघुवीर सहाय की रचना का उपयोग किया: 'बरसे घन सारी रात संग सो जा'। ख्यातिलब्ध पत्रिका 'दिनमान' के संपादक रहे और साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त रघुवीर सहाय के इस गीत को लता मंगेशकर ने गाया और संगीतकार वनराज

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

भाटिया ने संगीतबद्ध किया था। पद्मश्री और पद्मभूषण जैसे अलंकरणों से नवाजे गए गोपाल दास 'नीरज' भी साहित्य जगत से सिने जगत में आए, जहाँ उन्होंने अपनी पूरी धाक जमायी और हिन्दी फिल्म संगीत जगत को अपने गीतों के रूप में अनमोल मोती दिये। और फिर शिखर पर रहने के बावजूद चकाचौंध से भरी फिल्मी दुनियाँ को छोड़ कर वापस साहित्य जगत में लौट आए। फिल्म 'नई उमर की नई फसल' में उनका लिखा गीत 'कारवाँ गुजर गया गुबार देखते रहे' अत्यंत लोकप्रिय हुआ। इस गीत को उन्होंने सिनेमा के लिए नहीं लिखा था, बल्कि यह उनके काव्य संग्रह में संकलित था और इसे अभिनेता भारत भूषण के फिल्म निर्माता भाई ने नीरज से अनुमति लेकर अपनी फिल्म में शामिल किया था। इस साहित्यिक रचना को कालजयी बनाने में संगीतकार रोशन के संगीत में निबद्ध धुन और मोहम्मद रफी के भावप्रवण स्वर की भी प्रमुख भूमिका रही। कालांतर में जब नीरज सिनेमा के लिए लिखने लगे, तब भी कम से कम दो गीत उन्होंने अपनी पुरानी कविताओं को आंशिक परिवर्तन के साथ फिल्म संगीत माला में पिरोए। राज कपूर की अति महत्वाकांक्षी फिल्म'मेरा नाम जोकर का मशहूर गाना 'ऐ भाई जरा देख के चलो आगे ही नहीं पीछे भी ऊपर ही नहीं नीचे भी' वास्तुतः नीरज की 'राजपथ' नामक एक पुरानी कविता थी। इसी प्रकार देव आनंद द्वारा निर्देशित पहली फिल्म 'प्रेम पुजारी' का सचिनदेव बर्मन के संगीत में निबद्ध सदाबहार गीत 'शोखियों में घोला जाये फूलों का शबाब उसमें फिर मिलाई जाये थोड़ी सी शराब होगा यूं नशा जो तैयार वो प्यार है', नीरज की एक बहुत पुरानी कविता थी, जिसकी आरम्भिक पंक्तियों में थोड़ा बदलाव करके गीतकार ने उसके अंतरे फिल्म की सिचुएशन के अनुरूप लिखे थे। मूल कविता में शोखियों की जगह चाँदनी शब्द था। नीरज की ही तरह एक अन्य मंचीय कवि संतोषानंद भी साहित्य जगत के अतिरिक्त सिनेमा में भी सफल रहे। अभिनेता– निर्माता– निर्देशक मनोज कुमार ने पहली बार अपनी फिल्म'पूरब और पश्चिम' में उनके लिखे एक गीत 'पुरवा सुहानी आई रे' लिया जो काफी लोकप्रिय हुआ। मनोज कुमार की ही 1972 में आई फिल्म 'शोर' में सन्तोष आनंद के गीत 'एक प्यार का नगमा है, मौजों की रवानी है जिंदगी और कुछ भी नहीं तेरी मेरी कहानी है' ने उनको फिल्म गीत–संगीत की दुनियाँ में अमर कर दिया। इसे मुकेश और लता ने लक्ष्मीकान्त प्यारेलाल की धुन पर अपने कर्णप्रिय मधुर स्वर से उत्कर्ष प्रदान किया था। इसी प्रकार राजस्थान के उदयपुर के लोकप्रिय मंच कवि विश्वेश्वर शर्मा ने शंकर जयकिशन की धुन पर फिल्म'संन्यासी' के लिए'चल संन्यासी मंदिर में' गीत लिखकर छा गए और कई वर्ष तक फिल्म जगत में रमे रहे । एक और कवि जिसने साहित्य, राजनीति और फिल्म तीनों क्षेत्रों में सार्थक हस्तक्षेप किया, वे थे बालकवि बैरागी जो कवि सम्मेलनों के तो ओजपूर्ण कवि थे ही, साथ ही मध्य प्रदेश शासन में मंत्री तथा लोक सभा के सदस्य भी रहे। उनका एक अप्रतिम गीत 'तू चंदा मैं चांदनी, तू तरुवर मैं पात रे' सुनील दत्त की राजस्थान के रेगिस्तान की पृष्ठभूमि पर बनी फिल्म 'रेशमा और शेरा' में जयदेव के संगीत में रचबस कर ऐसा गूँजा कि आज तक भुलाया नहीं जा सका। एक बार पुनः राजस्थान की रेतीली धरती की पृष्ठभूमि पर बनी ख्वाजा अहमद अब्बास की फिल्म 'दो बूंद पानी'में जयदेव की धुन पर ही बाल कवि बैरागी का गीत 'बन्नी तेरी बिंदिया की लेले रे बलैया' भी अविस्मरणीय है। गायिका शारदा के संगीत में निबद्ध फिल्म 'क्षितिज' में बैरागी का गीत कहीं से भी फिल्मी गाना नहीं बल्कि विशुद्ध कविता लगता है। किशोर कुमार के स्वर में गाया गया यह सुन्दर गीत है – 'अंधे सफर में हम भी तुम भी, जीवन की राहें लंबी क्या तेरा क्या मेरा, माया का है फेरा, काहे को भूले धरम भी'। साहित्य और राजनीति दोनों क्षेत्रों में अपनी अलग पहचान बनाने वाली राजस्थान की एक लोकप्रिय कवयित्री प्रभा ठाकुर ने भी कई फिल्मों के लिए गीत लिखे। वे लोक सभा तथा राज्य सभा की सदस्य रहीं। शंकर जयकिशन के संगीत में फिल्म 'पापी पेट का सवाल है' के लिए प्रभा ठाकुर ने अपना ही लिखा गीत 'मोसे चटनी पिसावे, छैलो चटनी पिसावे कैसा बेदर्दी समझे ना मेरे जी की बात' गाया भी था। उनकी कुछ प्रमुख फिल्में रहीं: 'अलबेली', 'दुनियादारी', 'आत्माराम', 'घुंघरू' और 'कच्ची सड़क' इत्यादि उनकी विशेष उल्लेखनीय फिल्में थीं। जयपुर के हिन्दी और संस्त साहित्य के विद्वान हरिराम आचार्य के गीत भी कुछ फिल्मों में शामिल किए गए। सबसे पहले उनसे गीत लिखवाया जयपुर के ही संगीतकर दानसिंह ने फिल्म 'भूल ना जाना' के लिए। मगर यह फिल्म डिब्बों में बंद रह गई और कभी रिलीज नहीं हो पाई। इसके बावजूद उसके गानों के रिकॉर्ड बाजार में आए और लोगों के बीच लोकप्रिय हो गए। इस फिल्म में आचार्य ने दो नगमें लिखे। गौरतलब बात यह है कि ये दोनों नगमें उर्दू भाषा में हैं। एक है– गीता दत्त का गाया कालजयी गीत 'मेरे हमनशीं मेरे हमनवां, मेरे पास आ मुझे थाम ले' और दूसरा है– मुकेश का गाया 'गम– ए– दिल किससे कहूँ, कोई भी गमख्वार नहींः हैं सभी गैर यहाँ।' आगे चलकर संगीतकार लक्ष्मीकांत प्यारेलाल ने आचार्य के गीतों को धुनों में बाँधा फिल्म 'मेहंदी रंग लाएगी' के अन्तर्गत। हरिराम आचार्य ने एक बार फिर सन् 2000 में दानसिंह के ही संगीत निर्देशन में जगमोहन मूंदड़ा की फिल्म 'बवंडर' के

PIF-7.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

लिए गीत लिखे। हरिवंश राय बच्चन जिनकी अत्यंत लोकप्रिय रचना 'मधुशाला' ने समूचे देश में धूम मचा दी थी, का एक अत्यंत भावपूर्ण गीत फिल्म 'आलाप' में लिया गया था, जिसे येशुदास ने जयदेव के संगीत निर्देशन में गाया था : 'कोई गाता मैं सो जाता संसृति के विस्तृत सागर में, सपनों की नौका के अंदर सुख दुख की लहरों में उठ गिर बहता जाता, मैं सो जाता'। इस बहुचर्चित कवि के नाम से एक गीत फिल्म 'सिलसिला' में भी है, जिसे उनके ही अभिनेता पुत्र अमिताभ बच्चन ने अपना स्वर दिया था। यद्यपि वह उत्तर भारत का एक लोकप्रिय लोक गीत है 'रंग बरसे भीगे चुनर वाली, रंग बरसे'। हिन्दी और डोंगरी भाषा की बड़ी कवियत्री और उपन्यासकार पद्मा सचदेव जिन्हें साहित्य का बड़ा सम्मान साहित्य अकादमी पुरस्कार मिल चुका है और जो पद्मश्री से भी अलंकृत हैं के भी कुछ गीत हिन्दी सिनेमा में समाकृत हुए। फिल्म 'आँखिन देखी' में सुलक्षणा पंडित तथा मोहम्मद रफी का गाया और जे. पी. कौशिक का संगीतबद्ध किया गया गीत 'सोना रे तुझे कैसे मिलूँ' आज भी संगीत प्रेमियों के बीच मशहूर है। साहित्य के क्षेत्र से ऐसे ही एक कवि थे, पद्मश्री से अलंकृत इंद्रजीत मीराबाई, सूरदास, कबीर, रैदास, रहीम, जैसे संत कवियों और मिर्जा गलिब, बहादुरशाह 'जफर', दाग, इकबाल, वाजिद अली शाह, जिगर मुरादाबादी, राही मासूम रजा जैसे शायरों और अमृतलाल नागर, अमृता प्रीतम, भगवती चरण वर्मा, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत, जैसे साहित्यकारों की रचनाओं को भी फिल्मी गीतों में स्थान मिला, जो इस बात का परिचायक है कि फिल्मी गीतों ने, न केवल हिन्दी बल्कि उर्दू के साहित्य को भी लोकप्रिय बनाने में अपना योगदान दिया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिनेमा और साहित्य – हरीश कुमार
2. मीडिया समग्र :जनमाध्यम और मास–कल्चर – जगदीश्वर चतुर्वेदी
3. भारतीय हिंदी सिनेमा की विकास यात्रा का एक मूल्यांकन – देवेंद्रनाथ सिंह, वीरेंद्र सिंह यादव
4. हिन्दी सिनेमा के सदाबहार संगीतकार – जावेद हमीद
5. हिन्दी फिल्मों के गीतकार – अनिल भार्गव
6. हिन्दी फिल्मी गीत : साहित्य, स्वर और गीत —– पुष्पेश पंत

*****